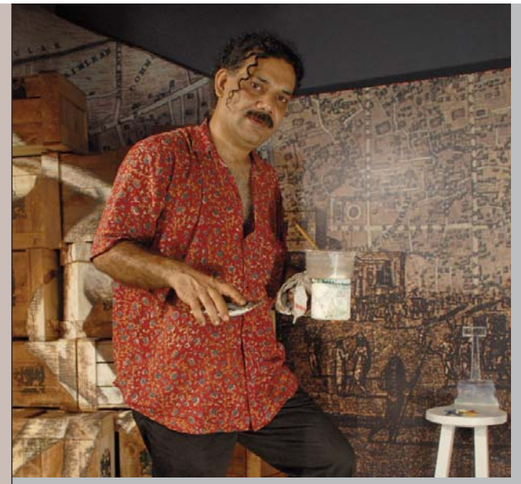

छत्रपति दत्ता कम बोलने वाले कलाकार हैं। अगर विकल्प मिले तो वह अपने कृतियों को नाम भी न दें।

छत्रपति दत्ता

बंधन तोड़ने वाला कलाकार

रूमा दासगुप्ता

कला वह है जिसका सृजन दर्शक करता है। कला कलाकृति की रचना तक ही सीमित नहीं है।'' मिट्टी के एक मानव सिर को अंतिम आकार देते 43 वर्षीय कलाकार की गहन-गम्भीर आवाज सुनने के लिए जरा प्रयास करना पड़ता है। पहली नज़र में देखने पर मानव सिर दुकानों और विज्ञापनों में इस्तेमाल किए जाने वाले पुतलों का एक हिस्सा ही लगता है लेकिन फिर निगाह उसकी गर्दन के चारों ओर लगी ज़िप पर जाती है और समझ में आता है कि यह साधारण सा लगता शिल्प असल में बनावटी बंटवारों और एकीकरणों को निरूपित कर रहा है। दीवार से सटे विनायल के बड़े-बड़े विज्ञापनपट्टों पर 19वीं सदी के इंग्लिश गीत लिखे हैं, विक्टोरिया युगीन क्रोशे की लेस में लिपटा पूरे आकार का एक गधा कोलकाता के बाहरी छोर पर बारूइपुर स्थित आर्टस्पेस के बारिश में भीगते लॉन को निहार रहा है। अगस्त-सितंबर 2007 में छत्रपति कई महीनों से यहां रहते हुए आकार प्रकार गैलरी के इंस्टॉलेशन शो की तैयारी कर रहे थे।

चित्रों, शिल्पों, फोटोग्राफों, मल्टीमीडिया रचनाओं, प्रदर्शन कला, फ़िल्म फ़ुटेज और तमाम तरह की चीज़ों के संयोग से छत्रपति जो रचते हैं, वह व्यंग्य और कटु हास्य की अच्छी-खासी खुराक होता है। वह सपाट कैनवस की सीमा से मुक्त होकर अपने सरोकारों और चिंताओं को अभिव्यक्त करते हैं। एक साल पहले कोलकाता की बिरला एकेडमी ऑफ़ आर्ट एंड कल्चर में में प्रदर्शित सांस्थानीकृत हिंसा और व्यक्ति की स्वतंत्रता पर टिप्पणी करने वाले इंस्टालेशन ''बोन मिल स्टोरीज़'' का पैमाना और तीव्रता अपने विषय के अनुरूप ही बड़े हैं- इसमें वीडियो, प्रदर्श्य कला, शिल्प और संवाद और बिम्बों का नितांत अनपेक्षित मेल है।

''मैं अपनी कृतियों में रूपकों और इंगितों का उपयोग करता हूं। मेरी हाल की कृतियों में नक्शों और क्षेत्रों को इंगित करने वाले सारगर्भित पाठों और रेखाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है,'' धीरे-धीरे छत्रपति दत्ता अपने काम के बारे में बताने लगते हैं।

जुलाई-अगस्त 2007 में न्यू यॉर्क की प्रसिद्ध टैमेरिंड आर्ट गैलरी में छत्रपति के नक्शा श्रृंखला के चित्र प्रदर्शित हुए। चित्रों के साथ प्रदर्शित उनके इंस्टालेशन ''कार लैंड?'' ने दर्शकों में उत्सुकता जगाई- इसमें उन्होंने पश्चिम बंगाल में मोटरकार कारखाने के लिए भूमि अधिग्रहण संबंधी हिंसक विवाद के माध्यम से आदिम युग से मनुष्य जाति की कहानी का अंग रहे भूमि स्वामित्व के रक्तरंजित इतिहास को जानने का प्रयास किया है। बांग्ला में कार का अर्थ ''किस का'' होता है। इस तरह देखें तो कलाकृति का नाम ही उसकी जटिलता का संकेत दे देता है।

पिछली गर्मियों में दत्ता और चार अन्य युवा भारतीय कलाकारों पप्पू बर्धन, चंद्रिमा भट्टाचार्य, प्रतूल दास और महाजबिन मजूमदार का कार्य ''ऑफ़ इमेजेज एंड इल्यूजन'' प्रदर्शनी में टेमेरिंड आर्ट में दीपांजना डांडा की देखरेख में प्रदर्शित हुआ।

ग्लोरियस सिटी, पेंटिंग

बोन मिल टेल्स, इंस्टालेशन

वर्ष 2008 के बसंत में छत्रपति की कृतियों की एकल प्रदर्शनी फिर से टैमेरिंड आर्ट गैलरी में आयोजित हो रही है। इस प्रदर्शनी में आयोजित चित्रों का विषय देश होगा- भौगोलिक, मनोवैज्ञानिक और लैंगिक देश। देश की खोज शांतिनिकेतन के कला भवन में चित्रकारी का अध्ययन करने का दौर से ही उनका महत्वपूर्ण सरोकार रहा है।

शुरुआत में छत्रपति कांच पर चित्रण करते थे, उनकी विशेषता थी उल्टी ओर से, उल्टे क्रम में रंगों का प्रयोग- अंतिम परत सबसे पहले और सबसे अंदर की परत अंत में। इस प्रक्रिया में अंतरतम की खोज के उनके प्रयास की झलक मिलती है। छत्रपति के लिए प्रक्रिया तैयार कलाकृति जितनी ही महत्वपूर्ण है।

वह कहते हैं, ''मैं अमेरिका के दर्शकों के लिए कुछ तैयार करने से पहले कुछ समय न्यू यॉर्क में बिताना चाहूंगा। अमेरिकी अनुभव सामूहिकता के विरूद्ध व्यक्ति के धर्मसंकट के बारे में मेरी खोज में नए आयाम जोड़ सकता है।''

छत्रपति हॉलीवुड फ़िल्मों, अभिनेता-निर्देशक चार्ली चैप्लिन और नागरिक अधिकार नेता मार्टिन लूथर किंग, जूनियर के भारी प्रशंसक हैं। 1960 के दशक के युवा आंदोलनों और वियतनाम युद्ध विरोधी प्रदर्शनों से उन्होंने व्यक्ति की स्वतंत्रता की अवधारणा का पाठ पढ़ा।

उनकी हाल की पेंटिंग ''द स्क्रीन'' बोलने की आज़ादी पर टिप्पणी है।

''अगर आवाजें कहीं पहुंच ही नहीं रहीं, उनका कोई असर ही नहीं हो रहा तो बोलने की आज़ादी का क्या मतलब बचा?'' छत्रपति के चेहरे पर बेचैनी झलकती है। और फिर वह जैसे उत्तर की तलाश में उस आंवें की ओर मुड़ जाते हैं जिसमें अपने युग की द्विविधाओं की तलाश का एक और अध्याय पक रहा है।

कपल-ए सोशल कंस्ट्रक्ट, इंस्टालेशन

फ़ोटो: शमी दासगुप्ता

रूमा दासगुप्ता कोलकाता में रहती हैं और स्वतंत्र लेखन कर रही हैं। वह हारमनी पत्रिका की संवाददाता भी हैं।

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजिए।